श्री धाम वृन्दावन में श्रीपाद मुरारि गुप्त
प्रतिष्ठित

श्री श्री निताई-गौर श्री विग्रह
की
अद्भुत-लीलाकथा

श्री हरिदास गोस्वामी

[श्रीधाम-वृन्दावनमें श्रीपाद मुरारि गुप्त प्रतिष्ठित]

श्रीश्रीनिताई-गौर श्रीविग्रह

की

अद्भुत लीला-कथा

•

श्री हरिदास गोस्वामी

•

प्रकाशक

आर्यावर्त्त प्रकाशन-गृह

९५-ए चित्तरंजन एवेन्यू

कलकत्ता-१२

प्रकाशक
रामनिवास ढंढारिया
१०, चौरंगी रोड,
कलकत्ता-१३

मूल्य
४० नये पैसे

प्राप्ति स्थान

- आर्यावर्त्त प्रकाशन-गृह
  ९५-ए, चित्तरंजन एवेन्यू,
  कलकत्ता-१२

- गोपाल ग्रंथालय
  १८७, दादी सेठ अग्यारी लेन,
  बम्बई-२

- बुआ गोस्वामिनीजी का श्रीनिताई-गौर-मन्दिर
  लुईबाजार, बनखण्डी मोहल्ला
  वृन्दावन

- राजवैद्य पं० श्रीलक्ष्मीनारायणजी
  पुराना शहर,
  वृन्दावन

- पं० श्रीकपीन्द्रजी
  रामायण-विद्यापीठ
  १२२, सुन्दर नगर,
  नई दिल्ली

- श्रीयुक्ता सुशीला सुन्दरी देवी
  गौर-विष्णुप्रिया कुंज
  बूढ़ा शिवटोला,
  नवद्वीप धाम (नदिया)

मुद्रक
मातादीन ढंढारिया
नेशनल प्रिन्ट क्राफ्टस्
९५-ए, चित्तरंजन एवेन्यू
कलकत्ता-१२ (फोन : ३४-७३२२)

प्रकाशकीय निवेदन

यह पुस्तिका आजसे लगभग ४० वर्ष पूर्व बंगला लिपि और भाषामें गोलोकगत पूज्यपाद श्रीहरिदासजी गोस्वामी द्वारा श्रीधाम नवद्वीपसे प्रकाशित हुई थी। लगभग ४८ वर्ष पूर्व उन्हें कुछ समय के लिये श्रीवृन्दावन धाममें निवास करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। इसी कालमें उनका परिचय श्रीश्रीनित्यानंद-वंशावतंस पूज्यपाद श्रीगोपेश्वर गोस्वामी प्रभुपादसे हुआ जो उन दिनों श्रीधामनिवासी उदार वैष्णवों की कृपासे, श्रीपाद मुरारि गुप्त द्वारा प्रतिष्ठित गौर-निमाई श्रीविग्रहकी सेवा-अर्चना किया करते थे। आज भी श्रीवृन्दावन-धाममें लुइबाजारके वनखण्डी मुहल्लेके एक छोटे-से मन्दिरमें श्रीश्रीगौर-निताईके यह अपूर्व श्रीविग्रह-द्वय विराजमान हैं जो 'बुआजी गोस्वामिनीके (पिसिमा गोस्वामिनिर) गौर-निताई' नामसे विख्यात हैं। श्रीहरिदासजी गोस्वामीने इन्हीं परम भाग्यवती 'बुआजी गोस्वामिनी'की परम-पवित्र चरित्र-कथा तथा इन प्राचीन श्रीविग्रहका आदि वृतांत एवं नित्य-लीला-कथाके कई अंश श्रीपाद गोपेश्वर गोस्वामी प्रभुसे सुने थे। इसी श्रुत मधुमय श्रीगौर-नित्यानंद-लीला-कथाका यह भक्तिरसपूर्ण यत्किञ्चित वर्णन प्रबन्धरूपमें सर्वप्रथम 'श्रीश्रीविष्णुप्रिया' पत्रिकामें धारावाहिक रूपमें और फिर अलगसे पुस्तिकाके रूपमें प्रकाशित हुआ था। कितने ही शिक्षित गौरभक्त इस साहित्यको पढ़कर श्रीवृन्दावनधाममें इन अपूर्व श्रीविग्रहोंके दर्शनोंके लिये आये तथा श्रीपाद गोपेश्वर गोस्वामी प्रभुसे परिचय प्राप्तकर परमानन्दित एवं कृतार्थ हुए।

इस लीला-वृत्तको पढ़-सुनकर साधारण भक्तिहीन, प्रेमशून्य पाषाणवत् कठोर हृदयमें भी रस-स्रोत का संचार होना एक स्वाभाविक सत्य है। इस वृतके इन गुणोंसे प्रेरित होकर, हमारे ही किन्हीं अनामी रहकर सुख अनुभव करनेवाले गुरुजनके मनमें, हिन्दी-भाषी गौर-भक्तोंके लिये इसको देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषामें प्रकाशित करनेकी भावना आई; सुपरिणाम-

स्वरूप यह पुस्तिका आपके समक्ष प्रस्तुत है। मुझे विश्वास है कि विशाल हिन्दी-भाषी गौर-भक्तगण इससे अवश्य-अवश्य लाभान्वित होंगे।

एक स्पष्टीकरण; इस पुस्तिकामें वर्णित लीलाकालका जहाँ-जहाँ अनुमान दिया गया है, वह सब लेखनके समयसे सम्बद्ध है।

दूसरी एक बात: पुस्तकमें वर्णित लीला प्रसंगोंमें कोई क्रम विशेष नहीं है, कहीं-कहीं तो पुनरुक्ति का दोष भी दीख सकता है। पर, भावुक-हृदय भक्तोंमें अपने प्राणप्रिय इष्टदेवके लीला प्रसंगोंको लिखते समय, उन्हें सवांरकर, या क्रम बनाकर लिखनेकी वृत्ति रहती भी तो संभव नहीं है; यह तो उनके हृदयमें विराजित मूर्त श्रद्धा और समर्पण की स्वयं-प्रसूत भावाभिव्यक्ति है, जो रसिक महानुभावों के निमित्त और आग्रहसे सम्पन्न बन जाती है—बस, बन जाती है। यह उनकी कृपा ही है कि वे स्वयंके लिये उपलब्ध रस-निर्झरिणीमें सभी रसिक-भक्तों के तन-मन-प्राण को डुबो लेना चाहते हैं, उन्हें रस-निमग्न कर देना चाहते हैं।

आज भी ऐसे कितने ही भक्त-रत्न गुप्त रूपसे श्रीवृन्दावनधाममें एवं श्रीधाम नवद्वीपमें विराज रहे हैं जिन्हें इस प्रकारकी लीलाओंके प्रत्यक्ष दर्शन और अनुभूति प्रायः होती ही रहती है; किन्तु उनका संग-लाभ कई जन्मोंके पुण्योंसे ही किसी-किसी भाग्यवानको हो पाता है।

गौर-भक्तोंकी सेवामें निवेदन है कि कभी श्रीधाम वृन्दावन जानेका अवसर प्राप्त हो तो बुआजी गोस्वामिनीके गौर-निताईके श्रीविग्रह-द्वयका अवश्य दर्शन करें।

श्रीहरिदासजी गोस्वामीने कई ऐसे अन्य भक्तोंके जीवन-वृत्तान्त भी लिखे हैं, पर वे सभी उपलब्ध नहीं हैं। गौर-भक्तोंकी कृपासे जिन-जिन ग्रंथोंकी उपलब्धि होती जायगी, उन्हें क्रमशः देवनागरी लिपिमें प्रकाशित करनेका विचार है। हमें आशा है कि हिन्दी-भाषी गौर-भक्त समुदायका सहयोग और आशीर्वाद इस योजनाको सुलभ होगा।

वि० सं० २०१९
१ जुलाई सन् १९६२

रामनिवास ढंढारिया

अनुक्रमणिका

उत्सर्ग-पत्र

परम पूज्यपाद श्रीयुक्त गोपेश्वर गोस्वामी प्रभुपाद दादा महाशय श्रीकरकमलेषु।

प्रेममय दादा !*

आज सात वर्षकी बात है। आपके सामने मैं वचनबद्ध हुआ था कि आपके प्राणसखा निताई-गौरकी मधुमय लीला-कथा एक लघु पुस्तिकाके आकारमें प्रकाशित करूँगा। अनेकों कारणोंसे अब तक इस शुभाभिलाषाको कार्यमें परिणत न कर सका था, इसके लिये आपके सामने तथा आपके निताई-गौरके सामने मैं अपराधी हूँ। आपलोग अदोषदर्शी हैं, अपराध नहीं देखते हैं; इसी आशासे साहस करके आपके निताई-गौरकी अपूर्व लीला-कथा आपके ही कर-कमलोंमें सादर समर्पित करता हूँ। यदि कृपा करके ग्रहण करेंगे तो मैं अपना सब श्रम सफल समझूंगा।

श्रीधाम नवद्वीप
श्रीश्रीगौर पूर्णिमा,
२६वीं फाल्गुन, गौराब्द ४३६।

आपके स्नेह और कृपाका भिखारी—
स्नेही भाई,
हरिदास

---

*बंगालमें ज्येष्ठ भ्राता को 'दादा' कह कर संबोधन किया जाता है

श्रीश्रीनिताई-गौर श्रीविग्रह

की

अद्भुत लीला कथा

• श्रीविग्रह का प्राकट्य

वीरभूमि जिलाके अन्तर्गत घोड़ाडाङ्गा पारुलिया तथा कालीपुर कड्या ग्रामके बीच एक मनोरम उपवन था। वहाँ उस उपवनके समीपके गाँवोंके लोग गाय-बछड़े आदि चराया करते थे। क्षेपा नामक एक ग्वालेने एक दिन गाय चराते समय देखा कि उसकी गोठकी एक गाय उस उपवनके बीच एक जगह खड़ी होकर जमीनके ऊपर दूध प्रदान कर रही है। इससे उसके मनमें सन्देह उत्पन्न हुआ। उसने उस स्थानको लक्ष्यमें रक्खा। देखा कि प्रतिदिन वह गाय उसी स्थान पर खड़ी होकर उसी प्रकार दूध प्रदान करती है। धीरे-धीरे यह बात गाँव में फैल गयी, और गाँवके लोगोंकी सहायतासे क्षेपाने उस स्थानको खोदना प्रारम्भ किया। खोदते-खोदते उसको एक प्राचीन काष्ठका सिंहासन मिला, जिसके ऊपर चार श्रीविग्रह मूर्तियाँ विद्यमान थीं। श्रीगौराङ्ग और श्रीनित्यानन्द प्रभुद्वयका दारुमय बालविग्रह था, और श्रीराधा-गोपीनाथ तथा श्रीधर शालिग्रामकी पाषाणमयी श्रीमूर्त्ति थी। श्रीगौर-निताईकी दारुनिर्मित श्रीमूर्त्तिमें कीड़े लग चुके थे और उसमें श्रीअङ्ग-रागका चिह्नमात्र भी न था। गाँवके गणमान्य लोगोंके परामर्शसे क्षेपा उन चारों श्रीविग्रहोंको उस गाँवसे सिउड़ी जिलामें ले गया। सिउड़ीके गौरभक्तवृन्दके आग्रहसे तथा क्षेपाकी इच्छासे उन विग्रहचतुष्टयका पुनः संस्कार करते समय देखा गया कि श्रीगौर-निताई श्रीविग्रहके श्रीपाटके अधः-प्रदेशमें 'दास मुरारि गुप्त' नाम खुदा हुआ है। आज भी वह नाम उस स्थान पर खुदा है, वर्तमान सेवाधिकारी श्रीपाद गोपेश्वर गोस्वामी प्रभु कहते हैं कि उन्होंने उसे देखा है। अक्षर बहुत दिन पहलेके खुदे होनेपर भी आज सुस्पष्ट जान पड़ते हैं।

•

सिउड़ीके गौरभक्तोंने बड़े समारोहके साथ श्रीविग्रहके अङ्गराग आदि कार्य सम्पन्न करके श्रीमूर्त्ति-चतुष्टयका अभिषेक किया। इस शुभकार्यके उपलक्षमें एक उत्सव हुआ। उसमें सिउड़ीके सब लोग सम्मिलित हुए।

श्रीगौर-निताईके श्रीविग्रहद्वय वात्सल्य रसके लिए उपयोगी बालमूर्त्तियाँ हैं। गठन-प्रणाली अत्यन्त मनोमुग्धकारी है। श्रीविग्रहद्वयमें शिल्प-निपुणता तथा अङ्ग-सौष्ठवकी पराकाष्ठा है। श्रीगौर-निताई दोनों भाई त्रिभङ्ग भावसे एकत्र खड़े हैं। श्रीकर-कमल थोड़े ऊपर उठे हुए हैं, मानो जगत्‌के जीवोंको प्रेम-दान कर रहे हैं। श्रीमुखमण्डलपर हास्यकी अद्भुत छटा है, प्रेमपरिपूरित कर्णपर्यन्त श्रीनेत्रद्वय; लावण्यमय, तथा कुछ-कुछ चञ्चल हैं। देखते ही जान पड़ता है मानो वह जगत्‌के जीवोंके प्रति शुभदृष्टिपात कर रहे हैं। श्रीमुखचन्द्रकी ओर कुछ देर देखने पर जान पड़ता है कि वह कनककेतकी-सदृश सुन्दर नयनद्वय आँसू बहाना चाहते हैं, मानो जगत्‌के जीवोंके दुःखसे प्रभुके प्राण रो उठे हैं। हे करुणामय गौर-सुन्दर! हे दयामय पतितपावन गौरहरि! तुम्हारे श्रीमुखचन्द्रके इस कारुण्य रसमय भावको देखकर ही महात्मा लोग लिख गये हैं—

जय जय गौरचन्द्र अनाथोंके नाथ।
जीव प्रति करो प्रभु शुभ दृष्टिपात॥

हे भक्त-वत्सल, दीनदयाल गौरहरि! तुम भक्त-सर्वस्व हो। भक्त-वाञ्छा-कल्पतरु हो। तुम सदासे भक्तोंकी वाञ्छा पूर्ण करते आ रहे हो। इसी कारण जान पड़ता है आज भक्तोंकी वाञ्छा पूर्ण करनेके लिए अपूर्व अपरूप रूप धारण करके प्रेमपूर्ण नेत्रोंसे कलि-ग्रस्त जीवोंके प्रति शुभ दृष्टिपात कर रहे हो। हे प्रभो! तुम्हारी जय हो!

श्रीपाद मुरारी गुप्तके भाईके पुत्र सिउड़ी जिलेके अन्तर्गत किसी गाँवमें रहते थे। वीरभूम और सिउड़ी जिले राढ़ देशके अन्तर्गत हैं। जिस गाँवके निकट उपवनमें श्रीविग्रहका आविर्भाव हुआ था, संभवतः उसी गाँवमें मुरारि गुप्तके भाईके पुत्र निवास करते थे, तथा श्रीविग्रहकी पूजा भी उसी स्थानपर होती थी। श्रीविग्रहकी इस पुनराविर्भावकी कहानी दो सौ वर्ष पहलेकी है। सुना जाता है कि महामारीसे वीरभूम जिलाके सारे गाँव एकबारगी उजाड़ हो गये; वहाँ मनुष्यके आवासका चिन्ह भी नहीं बचा।

श्रीपाद मुरारि गुप्तकी वंशावलीका नाम भी इस समय सुननेमें नहीं आता। परन्तु उनके द्वारा प्रतिष्ठित गौर-निताई विग्रहका पुनः आविर्भाव जिस प्रकार होता है उससे जान पड़ता है कि सेवाधिकारी उस महान् वंशके लोग उक्त महामारीमें काल-कवलित हो गये। श्रीविग्रह गिरे-पड़े और ध्वस्त मंदिरकी मृत्तिकाकी ढेरीमें गड़े पड़े थे, सेवा करनेवाला कोई नहीं था। इस प्रकार कितने दिनों तक श्रीविग्रह मिट्टीके भीतर पड़े रहे, यह ठीक-ठीक कोई नहीं कह सकता।

• श्रीविग्रहका श्रीधाम-वृन्दावनमें आनयन

उन श्रीविग्रहको कैसे श्रीधाम वृन्दावन लाया गया, इसकी भी अपनी कथा है। सिउड़ीमें श्रीविग्रहकी कुछ दिनों तक सेवा की गयी। उनकी सेवा-पूजाका सुन्दर प्रबन्ध था ; श्रीगौर-निताई विग्रह सिउड़ी-निवासी गौर-भक्तोंके लिए प्राण-स्वरूप थे। नित्य सेवा और कीर्तन महोत्सव आदि सत्कार्यमें भक्तवृन्द सदा व्यस्त रहते थे। इस प्रकार कुछ समय बीत गया। उसी समय उड़ीसा-निवासी श्रीश्यामानन्द परिवारके सिद्ध बलरामदास बावाजी तीर्थाटन करते हुए सिउड़ीमें पधारे। वह तैर्थिक वैष्णव थे, श्रीगौर-निताईमें उनका प्राण रमा रहता था, वह श्रीमन्दिरमें आकर अतिथि बने। श्रीविग्रहको देखकर उनका मन बड़ा आनन्दित हुआ। वह उस समय बूढ़े हो चले थे, अवस्था लगभग ६४ वर्षकी थी। श्रीमन्दिरमें रहते समय प्रभुके स्वप्नादेशसे उन्होंने श्रीविग्रहकी सेवाका भार अपने ऊपर ले लिया। वे तीर्थाटनकी वासना त्यागकर अत्यन्त निष्ठापूर्वक श्रीगौर-निताईका सेवा-कार्य करने लगे, इससे उनका मन बड़ा आनन्दित हुआ। सिउड़ीमें रह कर सिद्ध बलराम दास बाबाजीने इस प्रकार कुछ दिन जी भरकर अपने प्राण गौर-नित्यानन्दकी सेवा की। उसी समय एक अपूर्व घटना घटी।

श्रीमती चन्द्रशशी देवी नदिया जिलाके अन्तर्गत उला ग्रामके सुप्रसिद्ध धनी मुखोपाध्याय वंशकी कुलवधू थीं। उनका ब्याह पण्डित श्रीगदाधर गोस्वामीके वंशज मामू गोस्वामीके परिवारमें हुआ था। वे १८ वर्षकी अवस्थामें ही विधवा हो गयीं। श्वशुर और पितृवंशके अतुल ऐश्वर्यकी

अधिकारिणी बनीं। अपनी जमींदारीसे सम्बन्धित किसी मुकदमेको लेकर उस समय वह उपर्युक्त धनाढ्य ब्राह्मण-विधवा सिउड़ीमें आई। श्रीगौर-निताई श्रीविग्रहके श्रीमन्दिरके पास एक घरमें वासा लेकर वे अपने लोगोंके साथ रहने लगीं। वहाँ रहते हुए वे नित्य ही श्रीगौर-निताई श्रीविग्रहके दर्शन करके अपने नेत्रोंको सफल करती थीं। नित्य एक मन दूधके पायससे श्रीविग्रह-द्वयको भोग लगता था। एक दिन श्रीमती चन्द्रशशी देवी आरती-दर्शन करके रातमें सो गयीं, स्वप्नमें क्या देखती हैं कि, मानो गौर-निताई दोनों भाई उनके पास आकर कह रहे हैं—"माँ! हमको बड़ी भूख लगी है, तुम स्वयं राँध कर हमको पायस खिलाओ।" स्वप्न देखकर भाग्यवती ब्राह्मण-कन्याकी नींद टूट गयी। उन्होंने श्रीविग्रहके सेवाधिकारी सिद्ध बलरामदास बाबाजीके समीप जाकर अपना सारा स्वप्न-वृत्तान्त कह सुनाया। उस समय श्रीविग्रहकी अङ्ग-सेवा हो रही थी। श्रीअङ्गरागादि कार्यमें १५ दिन बीत जानेपर ब्राह्मण-कन्याके द्वारा भोगकी व्यवस्था होगी। इतना कह कर बाबाजीने उनको धीरज बँधाया। यथा-समय श्रीविग्रहकी श्रीअङ्गराग अनुष्ठान-क्रिया समाप्त हुई। श्रीमती चन्द्र-शशीदेवीके हाथसे श्रीविग्रहके लिए भोग राँधनेका कार्य वैष्णव शास्त्रके द्वारा विहित नहीं है, यह बतलाकर महन्त बलरामदास बाबाजीने ब्राह्मण-पत्नीको विष्णु-मन्त्रोपदेश ग्रहण करनेके लिए कहा। श्रीमती चन्द्रशशी देवीने किसीसे कुछ न कहकर तत्काल उनके कथनानुसार कार्य किया तथा स्वयं भोग रन्धन करके गौर-निताईको भोग लगाया। प्रसादका अन्न ब्राह्मण-वैष्णवोंको बाँट-कर उन्होंने भी प्रसाद ग्रहण किया। उसी दिन ब्राह्मण-कन्याने रात्रिमें और एक अपूर्व स्वप्न देखा। उस स्वप्नका मर्म यह था: ब्राह्मण-पत्नी रातमें अपने घरमें शयन कर रही थी। स्वप्न क्या देखती है कि वह मानो अपने देशमें लौट जानेकी तैयारी कर रही है; उसी समय गौर-निताई दोनों भाई उनके वस्त्रका आँचल पकड़कर कातर स्वरसे कह रहे हैं—"माँ! तुम मत जाओ। तुम्हारे चले जाने पर हमको भोजन कौन देगा? तुम हमारी माँ हो। माँ! तुमको हम जाने नहीं देंगे।" ब्राह्मण-पत्नी दोनों बालकोंको अच्छी बातें कहकर, प्यार दुलार करते हुए आँचल छोड़ देनेके लिए कहती हैं। दोनों बालक उनका आँचल कदापि नहीं छोड़ना चाहते। इसी बीच वस्त्राञ्चलके उस अंशको लेकर कुछ खींचातानी हुई। ऐसा लगा मानो वस्त्रका एक टुकड़ा फट गया, और दोनों बालक निराश होकर न जाने कहाँ चले गये।

ब्राह्मण-कन्याकी नींद टूट गयी। उन्होंने आश्चर्य-चकित होकर देखा कि यथार्थ ही उनके वस्त्राञ्चलका एक टुकड़ा निकल गया है। उन्होंने तत्काल महन्त बाबाजीके पास जाकर सारी बातें खोलकर कह दीं। उस समय सवेरा हो गया था। श्रीमन्दिरका द्वार अभी खुला न था। यह अपूर्व स्वप्न-वृत्तान्त सुनकर महन्त बाबाजीने झटपट श्रीमन्दिरका द्वार खोलकर श्रीविग्रहको जगाया। बड़े ही आश्चर्यके साथ सबने देखा कि ब्राह्मण-कन्याके वस्त्राञ्चलका अंश श्रीगौर-निताई श्रीविग्रहके हाथमें है।

सिद्ध बलरामदास बाबाजी तथा चन्द्रशशी देवी यह देखकर प्रेमानन्दमें गद्‌गद् होकर रोने लगे। बाबाजी बोले—"माँ! गौर-निताई तुम्हारे ही पुत्र हैं। तुम्हारे पास रहने, तुम्हारे हाथ का भोग पानेकी इनकी बड़ी साध है। माँ! तुम इनकी साध पूर्ण करके अपने जीवनको सार्थक करो।" श्रीमती चन्द्रशशी देवीका सौभाग्य देखकर महन्त बाबाजी परम आनन्दित हुए।

विधवा ब्राह्मण-कन्याने उसी समय श्रीगौर-निताईकी सेवाका भार अपने हाथमें ले लिया। वह अपने घर लौटकर नहीं गयी। उन्होंने अपने लोगोंको घर लौट जानेका आदेश दिया। उनके मनमें पूर्ण वैराग्य उदय हुआ। उन्होंने धन-सम्पत्तिकी ममता-माया छोड़कर, आत्मीय स्वजनोंके मोहसे दूर रहकर अपने प्राण-धन गौर-निताईके सेवा-कार्यमें अपना तन-मन न्यौछावर कर दिया। उस समय उनकी अवस्था केवल बीस वर्षकी थी। वे परम सुन्दरी रमणी थीं। बाल-विधवा थीं। ऐसी अवस्थामें बाबाजीसे दीक्षामन्त्र ग्रहण, वैष्णव-मन्दिरमें वास, वैष्णव-सेवा इत्यादि कार्योंमें लगे रहनेके कारण उन ब्राह्मण-कन्याकी समाजमें विशेष निन्दा हुई। लोग नाना प्रकारकी बातें करने लगे; अपयश लगाने लगे। इससे ब्राह्मण-कन्याके मनमें बड़ा क्षोभ हुआ। महन्त बाबाजीसे उन्होंने अपना दुःख कह सुनाया। बाबाजीने उत्तर दिया—"माँ! तुम अपने गौर-निताईसे पूछो। वे ही तुम्हारा दुःख दूर करेंगे।"

मर्माहत होकर उस ब्राह्मण-कन्याने उस दिन बड़े ही दुःखित अन्तःकरणसे अपने गौर-निताईको अपना दुःख निवेदन किया। रातमें स्वप्न देखा कि, दोनों भाई माँके कंठसे लगे कह रहे हैं—"माँ! हमको लेकर तू वृन्दावन चल।" ब्राह्मण-कन्याने स्वप्न-वृत्तान्त जब महन्त बलरामदास बाबाजीसे कहा तो वे श्रीविग्रह लेकर श्रीमती चन्द्रशशी देवीके साथ श्रीपाद वृन्दावन

चले आये। नौकाके ऊपर श्रीविग्रहको साथ लेकर महन्त बाबाजी और श्रीमती चन्द्रशशी देवीके श्रीवृन्दावनमें उतरने या श्रीविग्रहकी स्थापना करनेके स्थानादिके विषयमें कोई निश्चय न था। श्रीयमुनाजीके घाटपर जब नौका लगी तो सब लोग श्रीविग्रहका दर्शन करके आनन्द-ध्वनि करने लगे। उसी घाटपर एक निष्ठावान् श्रीवृन्दावनवासी गौर-भक्त स्नान कर रहे थे। उन्होंने श्रीवृन्दावनमें एक नवीन कुञ्ज-कुटीरका निर्माण करवाया था। उन्होंने अत्यन्त आदर-सत्कारके साथ श्रीगौर-निताई विग्रहकी स्थापना अपने घरमें करवाई तथा सिद्ध बलरामदास बाबाजी और ब्राह्मण-कन्याको भी अपने यहाँ स्थान दिया। श्रीधाम वृन्दावनमें लुई बाजारके बनखण्डी मुहल्लेमें उसी श्रीमन्दिरमें आज भी वे श्रीविग्रह विराजमान हैं। अनुमानतः ६०-६५ वर्ष हुए श्रीविग्रह श्रीवृन्दावनधाममें आकर पूजित हो रहे हैं। श्रीश्रीगौर-निताई श्रीविग्रह-द्वयने यहाँ आनेपर नित्य ही नवीन लीला-रहस्योंका उद्घाटन किया है, और कर रहे हैं। इसका आगे क्रमशः वर्णन कर रहा हूँ।

• वृन्दावनके वनखण्डी मुहल्लेमें भक्ताबुआके गृह-आगमन

श्रीधाम वृन्दावनमें नदिया जिला निवासिनी 'भक्ता' और 'मेनका' नाम की दो धर्म-परायणा भक्तिमती और अतिशय निष्ठावती वैष्णव रमणियाँ वास करती थीं। उन दोनोंमें बुआ-भतीजीका सम्बन्ध था। भक्ता बुआ थी और मेनका भतीजी। उन दोनों भाग्यवती रमणियोंके घर गौर-निताई आये। श्रीयमुना तीरसे वे गौर-निताईको अपने घर आदरपूर्वक बुला लायीं। श्रीधाम वृन्दावनमें बनखण्डी, मुहल्लेके लोग धर्मपरायण भक्ताको 'बुआ' कहकर पुकारते थे। श्रीमती चन्द्रशशी देवी श्रीधाममें आकर भक्ताके घर गौर-निताईकी सेवा करने लगी। भक्तिमती 'भक्ता' परम आदर-पूर्वक सेवा-कार्यमें उनकी सहायता करने लगीं। वे दो बहिनोंकी तरह एक साथ प्रेम और आनन्दपूर्वक रहने लगीं। श्रीमतीचन्द्रशशी देवीको भक्ता देवी 'दीदी' (अर्थात् बड़ी बहिन) कहकर सम्बोधन करती थीं। अतएव मुहल्लेके लोग उनको भी 'बुआ' कहकर सम्बोधन करने लगे। उनका विशुद्ध आचार, सेवा-निष्ठा, गौर-निताईके प्रति अपूर्व प्रेमभक्ति, दया-दाक्षिण्य, सब जीवोंके प्रति समताका भाव आदि सद्गणोंकी राशि देखकर श्रीवृन्दावनके

निवासी नर-नारीवृन्द उनकी ओर आकृष्ट हो गये। सभी उनको 'बुआ' कहकर सम्मान करते थे।

श्रीवृन्दावनधामके निवासी वैष्णवोंने उनका सदैव अनुसरण किया। गौर निताईके मन्दिरमें भजनानन्दी वैष्णवगण सदा आते रहते थे। वे लोग श्रीमती चन्द्रशशी देवी, "बुआजी गोस्वामिनी" की पद-धूलिको प्राप्त कर अपनेको कृतार्थ समझते थे। श्रीधाम वृन्दावन-निवासी आबालवृद्धवनिता श्रीविग्रहको "बुआके गौर-निताई" कहकर सुखी होते थे। वृन्दावन-धन श्रीगौर-निताई श्रीवृन्दावनमें आकर नित्य नये-नये लीला-रङ्ग रचने लगे। पहले कहा जा चुका है कि श्रीविग्रहद्वयकी बालमूर्त्ति है। सेवाधिकारिणी बुआजी गोस्वामिनीके वात्सल्य प्रेममें दोनों भाई बँधे हुए हैं।

• बुआजी गोस्वामिनीकी दिनचर्या

पहले कह चुका हूँ कि वे संसार सुखसे वञ्चित थीं। प्रभुने उनको ऐहिक सुखसे वञ्चित किया था, परन्तु पारमार्थिक सुखसे सुखी बनाया था। वह गौर प्रेममें सदा आनन्दित रहती थीं, सर्वदा उनके मुख-मण्डलपर हास्यकी छटा रहती थी। जगत्के सभी लोग उनके लिए पुत्रवत् थे। सारी नारी जाति उनके लिए कन्या जैसी थी। वह दिनमें तीन बार श्रीयमुना जलमें स्नान करती थीं। अपने हाथों श्रीविग्रहकी सेवाके सारे कार्य करती थीं। सेवा-कार्यमें किसीसे किसी प्रकारकी सहायता नहीं लेती थीं। १०६ वर्षकी आयु तक श्रीगौर-निताई विग्रहकी सेवा करके उनको व्रजधामकी प्राप्ति हुई; यह आजसे १५-१६ वर्ष पहलेकी बात है।

उसके बादसे श्रीविग्रहकी सेवा श्रीपाद गोपेश्वर गोस्वामी प्रभुके हाथोंमें आयी। गोपेश्वर प्रभुको 'बुआजी गोस्वामिनी' ने कुछ दिन साथ रखकर अपने हाथसे अपने तत्वावधानमें सेवाका कार्य सिखाया था। अपने अत्यन्त प्रेम-धन गौर-निताईको गोपेश्वर प्रभुके हाथमें समर्पण करके उन्होंने एक दिन कहा—"मैं आज जाऊँगी।" इतना कहकर गौर-निताई श्रीविग्रहके सामने बैठकर माला हाथमें लेकर गौर नाम जपते-जपते नित्य लीलामें प्रवेश कर गयीं। बुआजी गोस्वामिनीका समाधि-मन्दिर श्रीगौर-निताईके श्रीमन्दिरके भीतर विराजमान है। श्रीधाम वृन्दावनके सैकड़ों वैष्णव आज भी उस पुण्य समाधि स्थलमें बुआजी गोस्वामिनीके उद्देश्यसे भक्तिभावपूर्वक प्रणाम करने

तथा उनके सेवित श्रीगौर-निताई श्रीविग्रहके दर्शनोंकी इच्छासे नित्य गमन करते हैं।

• पुत्र-वत्सला माँके स्नेह की अनुपमेयता

बुआजी गोस्वामिनीके द्वारा सेवित श्रीनिताईगौर श्रीविग्रह ८-९ वर्षके बालक, न अधिक मोटे, न अधिक छोटे, अति सुन्दर वात्सल्य-रस-भावित श्रीमूर्त्ति हैं। गौर-निताईको लेकर वह स्नेहपूर्वक पूर्ववत् प्रतिपालन करती थी। प्रभुद्वय भी उनको मातृवत् मानते थे, और प्रेम करते थे। इस बातके प्रमाण-स्वरूप एक दिनकी एक कथा सुनिये। बुआजी गोस्वामिनी अपने हाथसे भोग राँधकर अपने प्राणोंसे भी अधिक प्रिय गौर-निताईको भोजन कराती थीं। यह कार्य वे अन्य किसीके द्वारा नहीं कराती थीं। स्त्रियोंका मासिक स्त्रीधर्म इस सेवा-कार्यका विरोधी होता है। इसके लिए उनके मनमें सदा दुःख रहता था। किसीसे भी कुछ नहीं कहती थीं। एक दिन गौर-निताईका भोग राँधते समय उनके मासिक स्त्रीधर्मका लक्षण दीख पड़ा। वह अत्यन्त दुःखित चित्तसे मन्दिरके प्राङ्गणमें लेट कर रोते-रोते गौर-निताईके मुखचन्द्रकी ओर देखती रही। उनको तन्द्राका आवेश हुआ। वह जागते ही स्वप्न देखने लगीं मानो, गौर-निताई दोनों भाई उनके पास आकर कह रहे हैं—"माँ! तुमको दुःखी होनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। तुम हमारी माँ हो। हम तुम्हारे द्वारा प्रतिपालित सन्तान हैं। सामान्यतः माता ऐसी अवस्थामें जो करती है, तुम भी वही करो। उसमें कोई दोष नहीं होगा। माँ! उठो, जाओ स्नान करके आओ और हमको आहार दो, बड़ी भूख लगी है। आजसे तुम इस रोगसे मुक्त हो जाओगी।" ब्राह्मण-कन्या संशयग्रस्त होकर उठी। स्नान करके गौर-निताईके आदेशानुसार कार्य किया। प्रस्तुत भोग उनको निवेदित कर दिया। उसके बाद उन्हें फिर कभी स्त्री-धर्मके लक्षण दृष्टिगत नहीं हुए। उस समय वह प्रौढ़ावस्थाकी रमणी ही थीं। इस घटना का स्थल है सिउड़ी।

बुआजी गोस्वामिनीके प्रति गौर-निताईकी प्रत्यक्ष कृपाके निदर्शनकी अनेक कथाएँ हैं। एक-एक कथा प्रभुद्वयके विभिन्न लीला प्रसंगोंके प्रमाण हैं। ये सब अपूर्व लीला रङ्गकी कथाएँ क्रमशः इस पुस्तकमें प्रकट की जाती हैं। प्रभुद्वयकी सेवा हस्तान्तरित होनेके सम्बन्धमें एक अत्यद्भुत कथा यों है।

• श्रीपाद गोपेश्वर प्रभु पर सेवाका दायित्व और विग्रह-द्वयका आकार परिवर्तित

बुआजी गोस्वामिनीकी श्रीधामप्राप्तिके बाद श्रीपाद गोपेश्वर प्रभुके कन्धेपर गौर-निताई श्रीविग्रहकी सेवाका दायित्व आ पड़ा। श्री गोपेश्वर गोस्वामी प्रभु बाल-ब्रह्मचारी हैं। अनेक देश भ्रमण कर चुके हैं, तीर्थ-भ्रमण ही इनका प्रधान कार्य था। एक स्थानपर बँधे रहना इनके लिए एकबारगी असंभव था। श्रीविग्रह-सेवाका कार्य इनके द्वारा सम्पन्न होना दुष्कर था। अतएव श्रीविग्रहकी सेवाका भार ग्रहण करनेमें वह पहलेसे ही अनिच्छुक थे। पर बुआजी गोस्वामिनीके आग्रहसे तथा गौर-निताईकी इच्छासे वह श्रीविग्रह की सेवाके दायित्वसे युक्त हो गये। यह सेवा-कार्य हाथमें लेते ही उनको एक विपद्का सामना करना पड़ा। बुआजी थीं वात्सल्यरसकी सेविका और साधिका। श्रीविग्रहभी तद्भावापन्न तथा तदुपयोगी भावसे गठित थे। श्रीपाद गोपेश्वर प्रभु परम गौर-भक्त ह। वह श्रीमद्नित्यानन्दके वंशावतंस हैं। गौर-निताईमें उनका प्राण बसता है। ये उनके प्रेम-धन हैं। परन्तु वह सख्य रसके साधक हैं। बाल गौर और बाल निताईको लेकर उनको साधनामें उतना आनन्द नहीं मिलता। इस भाव-विपर्ययके कारण उनके मनमें बड़ा दुःख है। इस दुःखको वह बहुत दिन तक छिपा न सके। अपने प्राण-धन गौर-निताईको बीच-बीचमें अपने हृदयकी दुःखगाथा कहते हैं, और अभिमानपूर्वक बहुत रुदन करते हैं। भक्त-वत्सलने भक्तका दुःख सुन लिया। भक्तके भगवान् परम दयालु गौर-निताइने भक्तकी मनोकामना पूर्ण करनेकी ठानी। श्रीविग्रहद्वय अदृश्य रूपमें क्रमशः बढ़ने लगे। पहले लोग समझ न पाये, परन्तु भक्तवर प्रभुपाद गोपेश्वर गोस्वामी महाशयने दिव्य चक्षुसे देखा कि गौर-निताई उनके दुःखकी बात सुनकर उनका दुःख दूर करनेका विधान कर रहे हैं। धीरे-धीरे कुछ वर्षोंमें बाल-मूर्त्ति श्रीविग्रहद्वयमें किशोरावस्थाके पूर्वावयवके प्रसारके लक्षण परिलक्षित होने लगे। जिन्होंने ८-१० वर्ष पूर्व इन श्रीविग्रहका दर्शन किया था, वह अब कहने लगे कि बुआजी गोस्वामिनीके उन बाल-विग्रहसे वर्तमान श्रीश्रीनिताई-गौर कैशोरविग्रह पूर्णतः विभिन्न हैं। वक्षःस्थलका प्रसार, आकारकी दीर्घता, बाहुयुगलकी पूर्णता आदि सारे लक्षण विशिष्ट रूपसे लक्षित हो रहे हैं। भक्तकी मनोकामना पूर्ण करनेमें श्रीभगवान् कितने तत्पर रहते हैं, प्रभुद्वयकी इस लीला-कथासे यह पूर्णतः प्रकट हो जाता है।

•

इन सब अलौकिक लीलाकथाओंको निष्कपट भावसे विश्वास करना चाहिए। कविराज गोस्वामी कह गये हैं—

अलौकिक लीलाय जार ना हय विश्वास।
इहलोक परलोक तार हय नाश॥

"इन अलौकिक लीलाओं में जो विश्वास नहीं करते, उनका इहलोक और परलोक दोनों नष्ट हो जाते हैं।"

• श्रीविग्रह-द्वयका अंगराग

प्रभुकी एक और लीलाकथा सुनिये। पहले कहा जा चुका है कि यह गौर-निताई श्रीविग्रह बहुत पुराना है। श्रीपाद मुरारिगुप्तके द्वारा सेवित यही श्रीविग्रह है। श्रीमूर्त्तिके लिए बीच-बीचमें अङ्गरागकी आवश्यकता पड़ती है। श्रीपाद गोपेश्वर प्रभुके ऊपर सेवाकार्यका भार पड़नेपर जब श्रीमूर्त्ति-द्वयके लिए एकबार श्रीअङ्गरागकी आवश्यकता हुई तो वह अत्यन्त चिन्तित हुए। क्योंकि वह नहीं चाहते थे कि श्रीविग्रहको दूसरा कोई स्पर्श करे, अतएव शिल्पकारके हाथमें श्रीविग्रहके श्रीअङ्गराग-कार्यका भार देनेकी कल्पनासे अत्यन्त भयभीत होकर वह मन ही मन चिन्तित हो उठे। प्रभु-द्वयके समीप इस विषयमें उन्होंने प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना निष्फल न हुई। भक्त, दीनदयाल निताई-गौरके प्राण हैं। भक्तके मनका भाव समझनेमें उनको कुछ भी देर न लगी। आदेश हुआ—"तुम स्वयं अङ्गराग कार्य सम्पन्न करो।" गोस्वामी प्रभुका मस्तिष्क उद्वेलित हो उठा। वे चित्रकार भी नहीं हैं और शिल्पकार भी नहीं, यह दुरूह कार्य उनके द्वारा कैसे सम्पन्न होगा? पश्चात् अकल्याण होगा, इस चिन्तासे उनका हृदय व्याकुल हो उठा। परन्तु हृदयका आवेग था और प्रभुका आदेश—इन दोनों बातोंपर मन ही मन विचार करके उन्होंने इस नये कार्यमें हाथ लगाया। प्रभुकी कृपासे क्या नहीं हो सकता? वह कृपासिन्धु भक्तके द्वारा असाध्य कार्य सिद्ध करते हैं। यह तो एक तुच्छ बात थी! गोस्वामी प्रभुने अपने हाथों श्रीविग्रह-द्वयका श्रीअङ्गरागादि कार्य इतनी सुन्दरतापूर्वक सम्पन्न किया कि जान पड़ता था, कोई शिल्पकार वैसा कर ही नहीं सकता। इस श्रीअङ्गराग शुभकार्यके बाद श्री विग्रह-द्वयके सब अङ्गोंकी ज्योति मानो दूनी

हो गयी। दोनों भाइयोंकी रूप-राशि मानो फूटकर बाहर निकल रही है। ऐसा अपरूप सौन्दर्य मानो पहले कभी किसीने नहीं देखा था। श्रीपाद गोपेश्वर गोस्वामी प्रभु कहते हैं कि श्रीविग्रहके अङ्ग इतने सुकोमल, इतने सुशीतल, श्रीअङ्गकी स्पर्शानुभूति इतनी सुखप्रद है कि उसका वह एक मुखसे वर्णन कर ही नहीं सकते।

• सेवाके कठोर नियमोंका पालन

प्रभुद्वयके श्रीविग्रहकी सेवाकी मैंने बड़ी परिपाटी देखी। प्रत्येक सेवा-कार्य श्रीपाद गोपेश्वर प्रभुको अपने हाथों करना पड़ता है। प्रभुद्वयका कठिन आदेश है कि सेवा-कार्य अन्य किसीके द्वारा न कराया जाय। ऐसे बड़ा कठिन आदेश भी गोस्वामी प्रभु बुआजी गोस्वामिनीके स्वर्गवासके बादसे आज १५-१६ वर्ष तक प्रतिपालन करते आ रहे हैं। यदि किसी कारणवश किसी दिन कोई सामान्य कार्य किसी दास-दासीके द्वारा कराना होता है, तो प्रभुद्वय उसका दोष देखकर, उसकी त्रुटि दिखलाकर गोस्वामी प्रभुको सावधान कर देते हैं। नित्य इस प्रकार कठोर नियमपूर्वक देव-सेवाके कार्यका निर्वाह करना बहुत आसान काम नहीं है। रसोईके बर्तनोंकी सफाईसे लेकर शृङ्गार, भोग, आरती, कीर्तन, श्रीविग्रहके शयन पर्यन्त सेवाका प्रत्येक कार्य एक आदमीके लिए नितान्त असंभव होनेपर भी गोस्वामी प्रभु प्राणपनसे इन समस्त कार्योंको अपने हाथसे अब तक करते आ रहे हैं। बीच-बीचमें रङ्गीले प्रभु-द्वयके साथ सख्य रसके साधक गोस्वामी प्रभु भी कौतुक करनेसे बाज नहीं आते। ये सारी लीला-कथाएँ प्रभुद्वयके सेवा-कार्यसे सम्बन्धित हैं।

• उपालम्भ-खीझ

गोस्वामी प्रभु कभी-कभी मान करके सेवा-कार्यके कठिन दायित्वके सम्बन्धमें गौर-निताईको दो-चार खरी-खोटी सुना देते हैं, कभी उनको गोस्वामी प्रभुसे मधुर भाषामें अपशब्द भी सुनने पड़ते हैं। इसमें प्रभु-द्वयको बड़ा आनन्द प्राप्त होता है।

प्रिया यदि मान करि करये भर्त्सन।
वेद स्तुति हैते सेई हरे मोर मन॥

"यदि कोई प्रिया मान करके मेरी भर्त्सना करती है, तो वह वेदस्तुतिसे भी बढ़कर मेरे मनको हर लेती है।"

यह सारा गाली-गलौज भी वैसा ही होता है। प्रभुद्वय निर्विवाद भक्तकी डाँट-फटकार सुनते हैं और मुस्कराते रहते हैं। यह देखकर गोस्वामी प्रभुके मनमें और भी क्रोध होता है। वह कभी श्रीमन्दिर छोड़कर भाग जाते हैं, कभी मानपूर्वक सारे कर्म छोड़ कर सो जाते हैं। कभी सेवाकार्य किसीके हाथमें देकर कहीं कुछ दिनके लिए चले जाते हैं। इन सब बातोंकी एक-एक अपूर्व कथा है। उनको विस्तारपूर्वक लिखनेसे एक स्वतंत्र ग्रंथ हो जायगा। गौर-निताई गोस्वामी-प्रभुके द्वारा सेवाके कैसे भिखारी हैं, कैसे उनकी परीक्षा लेते हैं, यह सारी कथाएँ सुननेपर इसका स्पष्ट आभास मिल जाता है। ये सब कथाएँ अनन्त हैं। प्रभुका लीला-रहस्य जितना ही अद्भुत है, उतनी ही उनकी मधुर-लीला सम्बन्धी कथाएँ भी अलौकिक हैं।

अद्यावधि सेई लीला करे गोरा राय।
कोन कोन भाग्यवान देखिवारे पाय।।

श्रीधाम वृन्दावनके वयोवृद्ध वैष्णवों तथा वैष्णव माताओंसे प्रभुकी ये मधुर लीला-कथाएँ आज भी सुननेमें आती हैं। बुआजी गोस्वामिनीके कृपा-पात्र अनेक साधु-वैष्णव आज भी जीवित हैं। उनसे भी मैंने अनेक कथाएँ सुनी हैं, तथा इसके पूर्व सुनी कथाओंकी यथार्थताका भी प्रमाण प्राप्त किया है।

• श्रीगौर-निताईकी चरण-पादुका

गौर-भक्तवृन्दके मनोविनोदके लिए प्रभुद्वयकी अपूर्व लीलाकथाएँ एक-एक करके वर्णन करके आत्मशुद्धि करनेकी मेरी अभिलाषा है। आजसे ३०-३५ वर्ष पहलेकी बात है, सेरपुर बोगड़ा निवासिनी एक कुलीन वंशकी स्त्री श्रावण मासमें श्रीवृन्दावनधाममें झूलन महोत्सव देखने आयी थी। उन्होंने लुई बाजारमें बनखण्डी मुहल्लेके श्रीगौर-निताई-विग्रह मन्दिरके पास ही निवास किया था। उस समय वर्षा ऋतु थी। एक दिन थोड़ी-थोड़ी वृष्टि हो रही थी। श्रीमन्दिरके दालानमें बैठकर बुआजी गोस्वामिनी बांये

हाथसे गौर-निताईका पंखा खींच रही थीं और दाहिने हाथसे माला जप करती थीं। वर्षा धीरे-धीरे बढ़ने लगी। अपराह्नकालमें बुआजी गोस्वामिनीको कुछ तन्द्राका आवेश हुआ। वह श्रीमन्दिरके दालानमें अर्द्धजागृत अवस्थामें पंखा खींच रही हैं। उसी समय देखती क्या हैं कि बाल निताई पहले घरसे बाहर निकले, और वर्षाके पानीमें भीगते हुए आँगनमें उतर गये। पीछेसे बाल गौरने उनका अनुसरण किया। बुआजी गोस्वामिनी उच्च स्वरसे बोल उठीं—"अरे निताई-गौर! तुमलोग जा कहाँ रहे हो? इस वर्षामें भीगते हुए क्यों घरसे बाहर हुए हो? पानीमें भीगनेसे तुमलोगोंको सर्दी लग जायगी।" दोनों ही द्रुतगतिसे श्रीमन्दिरसे बाहर हो गये। बुआजी गोस्वामिनीकी ओर आश्चर्य-चकित होकर देखते हुए बोलते गये—"कहाँ जा रहे हैं हम, तू देखेगी?" बुआजी गोस्वामिनीने मानो जाग्रत अवस्थामें यह स्वप्न देखा, उनको मानो फिर तन्द्रा आ गयी। इधर बाल-गौर-निताई समीपके चिड़िया-कुञ्जमें जा उपस्थित हुए। उसी कुञ्जमें सेरपुर बोगड़ा निवासिनी पूर्वोक्त स्त्रीने बासा लिया था। वह भी उस समय निद्राग्रस्त थी। गौर-निताई दोनों भाई मिलकर उस परम सौभाग्यवती स्त्रीके सिरहाने बैठकर मानो सिरपर हाथ देकर उसे उठा रहे हैं। इस प्रकार स्वप्नावेशमें उस स्त्रीने बाल निताई-गौरके कण्ठसे निकली हुई सुमधुर ध्वनि सुनी—"यहाँ सोने आई हो? उठो।" स्वप्नावस्थामें सोई हुई स्त्रीने पूछा—"तुमलोग कौन हो जी?" उत्तर मिला—"हमारा नाम निताई-गौर है। हम वनखण्डीकी बुआजी के लड़के हैं।" उस भाग्यवती स्त्रीने पुनः पूछा—"तुमलोग बुआजीके लड़के कैसे हुए, समझी नहीं।" उत्तर मिला—"मुहल्लेके लोग हमको बुआजीका बेटा कहते हैं। वृन्दावनमें सभी हमको जानते हैं।" फिर पूछनेपर कि—"तुमलोग यहाँ क्यों आये?" उत्तर मिला—"देखो, हमारे पैरोंमें कीचड़ और ठण्ड लग रही है, तुम हमको खड़ाऊँ दो।" वह भाग्यवती स्त्री गौर-निताईके अपरूप रूपको देखकर मोहित हो गयी। ऐसे रूपवान् बालक उसने और कहीं नहीं देखे थे। उसकी नींद टूटनेपर स्वप्नका वृत्तान्त मनमें जाग उठा। बाल गौर-निताईके रूपसे वह आत्म-विस्मृत होकर रोती-रोती घरसे बाहर निकली। उस समय अपराह्नकाल था। अभी थोड़ी-थोड़ी वर्षा हो ही रही थी। श्रीधाममें वह पहले-पहल आयी थी। मुहल्लेमें किसीके साथ उसका परिचय नहीं था। रास्तेमें जिसको देखती है उसीसे पूछती है—"अरे बुआजीके बेटे निताई-गौरका घर कहाँ है?" एक व्रजवासीने वनखण्डीके श्रीगौर-निताईका श्रीमन्दिर दिखला दिया।

वह स्त्री रोती-रोती मन्दिरमें प्रविष्ट हुई। बुआजी मन्दिरके दालानमें बैठी उस समय भी पंखा खींचती थीं और जप कर रही थीं। उनको देखकर उस स्त्रीने पूछा—"क्या यही गौर-निताईकी बुआजीका घर है?" बुआजीने उत्तर दिया—"हाँ, माँ! यही बुआजीके बेटे निताई-गौरका घर है। तुम रोती क्यों हो माँ?" उस स्त्रीने धैर्य धारण करके पूछा—"माँ! तुम्हारे दोनों बेटे कहाँ हैं, मैं एक बार देखूँगी।" बुआजीने उसको आदरपूर्वक बैठाकर श्रीमन्दिरका द्वार खोला। उस स्त्रीने तब जो कुछ देखा, उससे उसके प्राण रो पड़े, आँखोंसे प्रेमाश्रु बह निकले। सारा शरीर पुलकायमान हो गया। वह और कुछ न बोल सकी, बहुत देर तक मूर्छित अवस्थामें पड़ी रही। पश्चात् अपनेको सँभालकर बुआजीको अपने स्वप्नका वृत्तान्त खोलकर सुनाया।

वह ये सारी स्वप्नकी बातें रोते हुए एक-एक करके बोल गयी और बाल गौर-निताईके मुख-चन्द्रकी ओर ताकती रही। उसने देखा कि स्वप्न-दृष्ट दोनों बालक उस मन्दिरमें श्रीविग्रहके रूपमें विराजमान हैं। ये ही बुआजीके बेटे गौर-निताई हैं। उसने गौर-निताईको बार-बार देखा। बस फिर वह उन्हें छोड़ न सकी। बुआजीने भी अपने उस दिनके तन्द्रावेशका स्वप्न-वृत्तान्त कह सुनाया। दोनों ही एक दूसरेका गला पकड़कर बड़ी देर तक रोती रहीं, उनके हृदयमें जो आनन्दकी बाढ़ आ गयी, उसका वर्णन कौन कर सकता है? उस स्त्रीने अपने मन-चोर बाल निताई-गौरके लिए चाँदीके बने दो जोड़े उत्तम खड़ाऊँ तैयार करा दिये। वे दो जोड़ी खड़ाऊँ आज भी श्रीमन्दिरमें विद्यमान हैं। प्रभुद्वय उनको नित्य व्यवहारमें लाते हैं। उस सौभाग्यवती रमणीके सौभाग्यको देखकर बहुतसे लोगोंके मनमें ईर्ष्या उत्पन्न हुई। बुआजी अपने दोनों बालकोंकी लीला देखकर चकित हो गयीं। उन्होंने प्रेमपूर्वक अपने प्रेमधन गौर-निताईसे कहा—"बेटे! तुम मेरे लिए सात राजाओंके धन हो। तुमको पाकर मैं सब भूल गयी। मैं दरिद्र हूँ, तुम्हारे लिए वस्तुएँ कहाँसे ला पाऊँगी? तुमलोग अपने कामकी वस्तु स्वयं जोगाड़ कर लेते हो, इससे तुम्हारी दुःखिनी माँको आनन्द ही होता है। परन्तु तुमलोग इस प्रकार भीगते हुए कहीं मत जाओ, बीमार पड़ जाओगे।" बुआजीके कैसे अपूर्व वात्सल्य भाव हैं। उन्होंने स्नेह-रज्जुसे वात्सल्य भावमें ही जगतके नाथ गौर-निताईको बाँध रखा था। उनके पवित्र नामके स्मरणसे जीवका कल्याण होता है। जय बुआजी गोस्वामिनीकी जय!

• आभूषणोंकी चोरी

एक दूसरी कहानी और भी अद्‌भुत है। यह लगभग २५ वर्ष पूर्वकी बात है। गौर-निताईके किसी एक प्रिय वैष्णव सेवकने श्रीमन्दिरमें कार्यका व्रत ले रखा था। वह वैष्णव अभी जीवित है। उनका नाम मैंने सुना है, परन्तु उसको छिपाये रखनेका आदेश मुझे मिला है। इसका कारण पाठक-वृन्द इस कहानीको पढ़नेपर स्वयं समझ जायेंगे। वह वैष्णव बुआजी गोस्वा-मिनीके बड़े प्रिय थे। उनके ऊपर विश्वास करके उन्होंने श्री मन्दिरके तत्वावधानका भार सौंप दिया और निश्चिन्त हो गयीं।

श्रीविग्रहके श्रीअङ्गके स्वर्ण-अलंकार आदि रातमें कुछ-कुछ श्रीअङ्गपर ही रहते हैं। उपर्युक्त बाबाजीके मनमें वह स्वर्ण-अलंकार आदि चुरानेकी कुवासना उत्पन्न हुई। वह मन्दिरका द्वार खोलकर निताई-गौरके श्रीअङ्गसे पाजेब, बाला, हार आदि पाँच सौ रुपये मूल्यके सुवर्ण अलंकार चुराकर एक दिन छिप गये। प्रातःकाल बुआजी गोस्वामिनीने उठकर श्रीमन्दिरका द्वार खोल कर देखा कि उनके गौर-निताईके श्रीअङ्ग पर अलंकारादि कुछ नहीं है। वह तर्क करके सोचने लगीं—यह कुकर्म किसने किया? ऐसे पापी भी जगत्‌में जन्म लेते हैं? यह सोचते-सोचते वह दुःखित चित्तसे श्रीमन्दिरके दालानमें सो गयीं। उनको कुछ तन्द्राका आवेश हुआ। उन्होंने गौर-निताईसे पूछा—"बतलाओ रे! यह काण्ड किसने किया?" उत्तर मिला—"माँ! वह वैष्णव बड़ा दरिद्र है। हम दोनों भाइयोंको बहुत रबड़ी खिलाई है, अलंकार हमने उसको दे दिये हैं। तुम उसको कुछ मत बोलना।" बुआजी गोस्वामिनी और क्या कहतीं? उनके बेटे गौर-निताई बड़े ढीठ हैं। उनकी ढिठाईकी रक्षा करनी ही पड़ेगी। वह हँसकर बोलीं—"अपनी वस्तु तुमने दे दी है, इसमें मैं क्या करूँगी? आवश्यक हो तो फिर लाओ।" उस बाबाजीका पता भी नहीं लगाया, और इस सम्बन्धमें कोई बात नहीं की।

अब भी वह भाग्यवान् वैष्णवमूर्त्ति श्रीमन्दिरमें आकर प्रभुद्वयको प्रणाम कर जाते हैं। प्रभुद्वयकी उनके ऊपर असीम कृपा देखकर बुआजी को बड़ा आनन्द हुआ। बेटेके शरीरका आभूषण चोरी करनेपर माँके हृदयमें जो दुःख होता है, बुआजीके मनमें उसका रंचमात्र दुःख न हुआ।

• स्वर्ण-नूपुर

एक और अद्‌भुत लीला कथा है। खडाऊँ माँगनेके समान ही प्रभु-द्वयने एक दूसरी सौभाग्यवती स्त्रीसे अपने श्रीचरणोंके लिए नुपुर माँगे थे। गौर-निताई ब्राह्मण कुमार हैं। ब्राह्मणके लड़केको भीख माँगनेमें लज्जा कैसी ? इसके सिवा वे बुआजीके बेटे थे। दुःखिनी बुआजीको दूसरा कोई आधार नहीं था। वह अपने अतुल ऐश्वर्यको तिलाञ्जलि देकर गौर-निताई-धनसे धनी होकर, अपने घरसे गौर-निताई धनका सहारा लेकर वृन्दावन आयी थी। गौर-निताई उनके सर्वस्व थे। सोलह वर्ष पहले जब श्रीगौर-निताई विग्रहकी सेवा गोस्वामी प्रभुके हाथमें आयी, उस समयकी यह कहानी है।

सेरपुर बोगड़ा निवासिनी प्रसन्न दासी नामकी एक स्त्री श्रीधाम वृन्दा-वनमें रहती थी। उन्होंने एक दिन स्वप्न देखा कि, गौर-निताई सर्वालङ्कारसे भूषित होकर उनके सामने आकर खड़े हो गये हैं और मन्द-मन्द मुस्कराते हुए कहते हैं—"देखो, हमको सब गहना हो गया है, परन्तु पैरमें नूपुर नहीं है। तुम हमको नुपुर दो"—इतना कहकर भव-विरिञ्चि-वाञ्छित, ध्वजा वज्र-अंकुश आदि चिह्नोंसे युक्त अपने रक्त चरणकमलोंको उठाकर भाग्यवती प्रसन्न दासीको दिखलाया। नींद टूटनेपर वह स्त्री उठकर गौर-निताईके मन्दिरमें आकर बुआजी गोस्वामिनीसे स्वप्न-वृत्तान्त बोल गयी, और व्याकुल होकर रोने लगी। उसने तत्काल गौर-निताईके पैरके स्वर्णनुपुर बनवाये और कृतार्थ हो गयी। बुआजीके बेटे गौर-निताई इसी प्रकार माँगकर अलङ्कार तथा नाना प्रकारकी सेवाकी वस्तुएँ एकत्रित करते थे। बुआजी सब समझती थी, और अपने पुत्र द्वयकी अपूर्व लीलाका रहस्य सबको समझाती थी।

• आत्म-रक्षा

अब प्रभुद्वयकी एक और अपूर्व लीलाकथा कहता हूँ। यह तीस वर्ष पहलेकी बात है। एक दिन गौर-निताईने बुआजीको स्वप्नादेशमें कहा कि 'हम लोग चौरासी कोस ब्रज-परिक्रमा कर आवें।" बुआजीने दूसरे ही दिन प्रातः अपने दो अनुयायी वैष्णवोंको बुलवाया। उन दोनों बाबाजीका नाम था मथुरादास और कृष्णदास। वे अब भी विद्यमान हैं और श्रीधाममें

वास करते हैं। प्रातःकाल खिचड़ीका भोग लगाकर और दोनों वैष्णवोंको साथ लेकर बुआजी अपने हृदयके धन गौर-निताई दोनों भाइयोंको साथ लेकर ब्रज-परिक्रमामें निकलीं। पालकी पर चढ़कर श्रीश्रीगौर-निताई श्रीविग्रह संकीर्तनके साथ-साथ परिक्रमाका आनन्द लेते चले। बुआजी गोस्वामिनी अपने दोनों लड़कोंको रास्तेमें यत्नपूर्वक खिलाती हुई चलीं। कई दिनका रास्ता था। रास्तेमें लड़कोंको बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। वे खूब खेल रहे थे। दोनों बाबाजी और बुआजी गौर-निताईको सारी ब्रज-परिक्रमा समाप्त कराकर श्रीमथुराधामके समीप हरि-दरवाजेसे कुछ दूर एक मठमें आकर विश्रामके निमित्त रुके। बुआजी कृष्णदास बाबाजीके साथ कुछ आगे जाकर शहरके भीतर एक स्थानमें सेवाके उद्योगमें लग गयीं। मथुरादास गौर-निताईको लेकर पालकीके साथ आ रहे थे। पालकी लाल कपड़ेसे ढँकी थी। देखनेसे जान पड़ता था कि कोई स्त्री जा रही है। मथुराधाममें अंग्रेजोंकी छावनी थी। वहाँ बहुतसे अंग्रेज सैनिक और अफसर रहते थे। कुछ अंग्रेज सैनिक गौर-निताईकी पालकीके पास आकर मथुरादाससे पूछने लगे कि, "इसमें क्या है?" उत्तर मिला कि, "इसमें ठाकुरजी हैं।" वे बोले—'हम ठाकुरजीको देखेंगे।"

मथुरादासने उनको समझाया कि ठाकुरजीकी अधिकारिणी यहाँ नहीं हैं, इस समय ठाकुरका दर्शन नहीं हो सकता। अंग्रेज सैनिकोंकी समझमें यह बात नहीं आयीं। वह जबरदस्ती ठाकुरजीको देखनेके लिए तैयार हो गये। उसी समय मानो विद्युत्के समान एक ऐसा तेज पालकीसे निकला, जिनसे उनकी आँखें झुलस गयीं, और वे भयभीत होकर 'बाप रे बाप' चिल्लाते हुए भाग निकले। मथुरादासने उस अद्भुत तेजको अपनी आँखोंसे देखा था। उनके मुखसे यह घटना सुनकर मन आनन्दित हो जाता है। बुआजी मथुरादासके मुखसे अपने हृदय-धन गौर-निताईका पराक्रम सुनकर मुस्कराने लगीं। मथुरादासको बड़ा भय हुआ था कि श्रीविग्रहको कहीं यवन लोग छू न दें। बुआजी यह सब सुनकर बोलीं—"हमारे गौर-निताईने आत्मरक्षा करना सीखा है। यह सुनकर मैं अत्यन्त प्रसन्न हुई, अब और कोई डर मेरे मनमें नहीं है।"

बुआजीके दुलारे बालक गौर-निताईके अनेक गुण हैं। इनकी एकसे एक अपूर्व लीला कथाएँ हैं, जिनको सुनकर महापापियोंकी [illegible] [illegible] भी

शुद्ध हो जायगा, और उसमें भक्तिरसका सञ्चार होगा। श्रीगौर भगवान्‌की लीलाकथाका अन्त नहीं है।

• श्रीविग्रहद्वयके सर्दी लग जानेसे नाक बहना :

और एक कथा सुनिये। बुआजी गोस्वामिनी वृद्धा हो गयी थीं। अपने दुलारे बालक गौर-निताईका लालन-पालन और सेवाका भार गोपेश्वर प्रभुके हाथ में देकर भी वह निश्चिन्त न हो सकीं। सदा सब बातोंकी पूछ-ताछ करती थीं। उस समय उनकी अवस्था एक सौ वर्षसे ऊपरकी होगी। ऊपरके एक घरमें शयन करके श्रीविग्रहद्वयकी सेवाका पर्यवेक्षण करती थीं। शरद ऋतुका समय था, श्रीधामकी कड़ाकेकी ठण्डकसे सभी लोग पीड़ित थे; वैसे जाड़ेके समयमें गौर-निताईको गर्मजलसे स्नानादि करानेकी व्यवस्था थी। गोपेश्वर प्रभु नये-नये सेवक थे, उनको यह ज्ञात न था। उन्होंने ठण्डे जलसे प्रभुद्वयको स्नान करा दिया। इससे बाल गौर-निताई-द्वयको सर्दी लग गयी। इसको दूसरा कौन समझता? उनकी दोनों नाकसे पानी बह रहा था। इसको भी कौन देखता? मातृवत्सल बाल गौर-निताईने दुःख पाकर अपनी स्नेहमयी माताको स्मरण किया। वृद्धा अत्यन्त कष्ट-पूर्वक ऊपरसे नीचे उतरकर श्रीमन्दिरके द्वार पर खड़ी हुई और देखा कि उनके दोनों बालकोंको सर्दी लग गयी है, नाकसे श्लेष्मा निकल रही है, दोनों आँखें लाल हैं। समीप जाकर श्रीअङ्गको स्पर्श करके देखा कि देह कुछ गर्म है। यह देखकर बुआजीके मनमें अत्यन्त कष्ट हुआ, उन्होंने झटपट अपने आँचलसे सबसे पहले बाल-गौरकी नाक पोंछकर गोपेश्वर प्रभुको बुलाया और रोती-रोती बोलीं—"गोपेश्वर! तुमने क्या कर डाला? देख तो ऐसे जाड़ेमें ठण्डे पानीसे स्नान करनेसे मेरे लालोंको कैसी सर्दी लग गयी है? बच्चोंका मुँह सूख गया है। यह देखो, नाकसे टप टप पानी बह रहा है। छिः! ऐसे सेवा की जाती है!" इतना कहकर बुआजीने गोपेश्वर प्रभुको डाँटकर अपना आँचल दिखलाया। गोपेश्वर गोस्वामी प्रभुको बुआजीकी बात उतनी विश्वासयोग्य न जान पड़ी। उनको नया-नया सेवा-कार्य मिला था, प्रेम-सेवाके मर्मको वह नहीं समझते थे, उन्होंने अपनी बुआजीको खोलकर मनकी सारी बातें कह दीं। इससे वृद्धाके मनमें कुछ रोष उत्पन्न हुआ और कुछ मान भी। वह गर्वपूर्वक श्रीमन्दिरके भीतर जाकर

बाल गौरकी नाक पर अांचल लगाकर बोलीं—"बाबा ! नाक झाड़ो तो ?" तत्काल उनकी नाकसे प्रचुर श्लेष्मा निकलकर बुआजी गोस्वामिनीके आँचलमें लग गया। वह बाहर आकर गोपेश्वर प्रभुको फटकारती हुई बोलीं— "यह देखो, मेरे बच्चोंको कितनी सर्दी लग गयी है। कितने दिनसे तू मेरे लालोंको ठण्डे जलसे स्नान करा रहा है ?" गोपेश्वर प्रभुने आश्चर्य-चकित होकर देखा कि बुआजीके आँचलमें लगे बाल गौरकी श्रीनासिकासे निर्गत पवित्र रसगन्धसे श्रीमन्दिर महँ-महँ कर रहा है। ऐसा दिव्य सौरभ-पूर्ण सुगन्धित द्रव्य कभी उनके जीवनमें सूंघनेमें नहीं आया। उनका भ्रम दूर हो गया। वह आनन्दमें अपने आपको भूल गये, तथा अपने मनकी दुष्टताके लिए विशेष सन्तप्त होकर बुआजीके चरणोंमें जा गिरे। तबसे शीतकालमें उन्होंने प्रभु-द्वयको कभी ठण्डे जलसे स्नान नहीं कराया। यह आज लगभग १८ वर्ष पूर्वकी बात है।

• सन्थालोंके कैथ :

और भी एक लीला-कथा सुनिये। कृष्णदास बाबाजी गोपेश्वर प्रभुके शिष्य हैं। अपने गाँव विष्णुपुरसे कृष्णदास बाबाजी श्रीधाम वृन्दावनमें आकर श्रीगौर-निताई-विग्रहकी सेवामें नियुक्त हुए। कृष्णदास परम गौर-भक्त हैं। गौर-निताई उनके हृदय-धन हैं। बुआजी उस समय जीवित थीं। कृष्णदासकी सेवा-विधि देखकर वह बहुत प्रसन्न थीं। गोपेश्वर प्रभु भी कुछ-कुछ सेवा कार्यका भार कृष्णदासके ऊपर देकर निश्चिन्त रहते थे। एक दिन भोगके समय कृष्णदास बाबाजी श्रीमन्दिरके द्वार पर बैठकर ध्यान कर रहे थे, उसी समय उन्होंने ध्यानमें देखा कि "विष्णुपुरके दक्षिण भुविमुड़ा गाँवमें हाराण और मधु सन्थालके घर एक कैंथ फलका पेड़ है। वृक्ष पर चढ़कर उस सन्यालकी दो कन्याएँ फल तोड़ रही हैं, गौर-निताई पेड़के नीचे खड़े होकर उनसे फल माँग रहे हैं। सन्थाल कन्या वृक्षसे दो पक्के फल तोड़कर गिरा रही है, और प्रभुद्वय उसको परम आनन्द-पूर्वक खा रहे हैं। इसी अवसर पर समीपके एक दूसरे गाँवकी दो सन्थाल लड़कियाँ वहाँ आ गयीं। प्रभु-द्वयको उस फलका लालच देकर अपने गाँव ले जानेके लिए आमंत्रण-गीत गाने लगीं और नाचने लगीं। उस गीतकी पंक्तियाँ यों थीं :—

तुरा कि मोवेर बाड़ि जाबि रे	मेरे घर चलोगे क्या तुम ?
तुरा कि मोदेर पाड़ा जाबि रे ।।	मेरे गाँव चलोगे क्या तुम ?
पाका पाका क्यांद दिबो,	पक्के पक्के कैथ दूंगी,
तोलाय बसे खाबि रे ।	नीचे बैठे खाना रे
तोलाय बसे खाबि रे ।।	तुम, नीचे बैठे खाना ।।

कृष्णदास बाबाजी अभी भी तन्मय बैठे गा रहे थे ; गोपेश्वर प्रभु इस विषयमें कुछ जानते न थे। उन्होंने आकर कृष्णदाससे पूछा--"कृष्णदास ! आज यह कैसा भाव है ? इतना आनन्द क्यों ? क्या हुआ है ?" परम गौरभक्त भजन-निष्ठ कृष्णदासको तब कुछ होश हुआ। उन्होंने सारा वृत्तान्त क्रमशः गोपेश्वर प्रभुको सुनाया। गोपेश्वर प्रभुने विष्णुपुरमें अपने आत्मीयको एक पत्र लिखकर इस घटनाकी खोजकी तब पता लगा कि सत्य ही उस दिन उस ग्राममें सन्थाल लोगोंके उत्सवमें गौर-निताईके द्वारा इस प्रकार अविकल लीला प्रदर्शित हुई थी। विष्णुपुरके निकटवर्ती गाँवके सन्थाल गौर-भक्त थे। इसका कारण यह था कि गोपेश्वर प्रभुके पिताश्री सिद्ध पुरुष थे। श्रीनित्यानन्द-वंशके वह उज्ज्वल मणि थे। पतितोद्धार ही उनका कार्य था। सन्थाल जातिको उन्होंने ही गौरभक्त बनाया था।

• बालगौरका रोष :

बुआजीके बाल गौर-निताईकी कथाएँ अनन्त हैं। एक और कथा लिख रहा हूँ। बाल्यकालमें बाल-गौराङ्गके मनमें बीच-बीचमें बड़ा रोष उत्पन्न होता था। रोषमें घरकी हाँड़ी-कुण्डा आदि तोड़ डालते थे, जूठी काली हाँड़ी पर बैठ जाते थे। श्रीगौराङ्गका रोष अधिकतर शचीमाँके ऊपर ही होता था। यहाँ भी वही माँ, और वही रोष था। एक दिनके रोषकी बात सुनिये। श्रीमन्दिरके द्वार पर दस बत्तीके प्रकाशका एक दीप जलता था। इसमें कुछ अधिक तेल जलता है, ऐसा विचार कर सन्ध्याके बाद ही गोपेश्वर प्रभु एक दिन प्रकाश बुझाकर बाहर कहीं चले गये। घरके भीतर अढ़ाई हाथ लम्बे पीतलके बने एक सुदृढ़ दीपदान पर घृतका दीप जल रहा था। वह कोजागर पूर्णिमाकी रात थी। पूर्व नियमोंके अनुसार उस दिन श्रीमन्दिरके बरामदेमें श्रीविग्रहद्वयका विलास होता था। इस बार उस दिन कुछ हुआ नहीं। इसके सिवा दस बत्तीका

आलोक भी बुझा दिया गया। इससे बालविग्रह प्रभुद्वयको रोष हो गया। बुआजी श्रीमन्दिरके दालानमें बैठकर हरिनाम जप रही थी। उन्होंने देखा कि मानो किसीने घरके भीतरके दीपदानको जोरसे धक्का मारकर घरके एक कोनेमें गिरा दिया, और घरमें अँधेरा हो गया। दीपदान छोटी वस्तु न था, वजनमें अन्दाजसे पाँच सेर होगा। चूहे-बिल्लीके द्वारा वह कभी गिराया नहीं जा सकता था। बुआजीने बाल-गौरके रोषका कारण समझ लिया, और गोपेश्वर प्रभुके आनेके बाद उनसे कहा—"गोपेश्वर! आज तू गौर-निताईको बाहर बरामदेमें नहीं लाया, और दसबत्तीके प्रकाशको भी बुझा दिया, इसीसे गौर दीपदानको फेंकफांक कर सरोष अँधेरेमें बैठा है। ऐसा काम अब कभी मत करना।" तबसे गोपेश्वर प्रभु सावधान हो गये। यह भी आजसे १८ वर्ष पहलेकी बात है।

• बालगौर एक बार फिर रुष्ट :

बाल-गौरके रोषकी एक और कहानी है। बुआजीकी आज्ञा थी कि किसीसे पहले भेंट लेकर प्रभुका प्रसाद न दे। गौर-निताईकी इच्छाके अनुसार ही उन्होंने यह आज्ञा प्रचारित की थी। एक दिन एक व्यक्तिने ठाकुरजीको दो आना भेंट चढ़ाकर प्रसाद माँगा। गोपेश्वर प्रभुने उससे कहा—"भेंट पीछे चढ़ाना पहले प्रसाद पाओ।" उस आदमीने यह बात नहीं सुनी, गोपेश्वर प्रभुको भी उसका ध्यान नहीं रहा। दुअन्नी श्रीमन्दिरके भीतर रह गयी। इससे प्रभुको रोष हुआ। श्रीमन्दिरके भीतर चौकी थी। बुआजी अपने नियमानुसार बरामदेमें बैठकर माला जप रही थीं। अचानक चन्दनकी चौकी मन्दिरके द्वारके चौखट पर ढकेलकर किसी ने जोरसे फेंक दी। वह डगरते डगरते बरामदेसे होकर निकटके भण्डारघरके कोनेमें स्थित एक चावलकी हांडीसे टकरा गई जिससे वह हांडी फूट गई। चारों ओर घरमें चावल बिखर गये। बुआजीने गोपेश्वर प्रभुको बुलाकर कहा—"यह देखो, उस दुअन्नीके लिए हमारे गौरको इतना रोष हो गया। हमारी इतनी बड़ी हाँड़ी फोड़ डाली, सारे घरमें चावल बिखेर दिये। तुम क्यों उसको रुष्ट करते हो?" गोपेश्वर प्रभु तबसे और भी सावधान हो गये। यहाँ विशेष द्रष्टव्य यह है कि चन्दनकी चौकी गोलाकार पत्थरकी बनी भारी वस्तु है, मन्दिरका चौखट ऊँचा होता है, उसको लाँघकर बरामदेके भीतर जाकर भण्डार घरमें उसकी यह गति एक अद्‌भुत काण्ड है। प्रभुको

रोष होने पर ज्ञान नहीं रहता था। शचीमाताके ऊपर रुष्ट होने पर वह आङ्गनके वृक्ष और घरके छप्परके ऊपर प्रहार करनेसे नहीं चूकते थे। यदि मन्दिरसे चन्दनकी चौकी फेंककर चावलकी हांडी फोड़ दी तो इसमें क्या आश्चर्य ?

• श्रीगोपेश्वर प्रभुको चेचक :

श्रीगोपेश्वर प्रभु एक बार बड़ी चेचकसे भयानक आक्रान्त हो गये। इस रोगमें वह महीने भर चारपाई पर पड़े रहे। उनके बचनेकी आशा किसीको न रही। उस समय बुआजीका गोलोकवास हो गया था। गोपेश्वर प्रभुकी अवस्था अत्यन्त शोचनीय थी, वह अचेतावस्थामें घरमें सोये हुए थे। बोली बन्द हो गयी थी। बाहरकी दशा देखकर सब लोग सोच रहे थे कि 'प्राण अब निकले तब निकले'। गोपेश्वर प्रभु कहते हैं कि वह भीतर ही भीतर परमानन्दमें नाना प्रकारके सुख-स्वप्न देख रहे थे। कभी देवलोक में जा रहे हैं, कभी मृत्युलोकमें आकर गौर-निताईकी सेवा कर रहे हैं। रात्रिके शेष भागमें उन्होंने देखा कि कोई एक विकराल मुख, भीषण दाँत वाली राक्षसीके समान भयंकर रूपवाली स्त्री उनके पास आयी है और उनको कहीं ले जानेकी चेष्टामें है। उसी समय बुआजी गौर-निताईको साथ लेकर गोपेश्वर प्रभुकी चारपाईके पास आकर खड़ी हो गयीं। उस समय उनको देखकर गोपेश्वर प्रभुके मनमें बड़ा आनन्द हुआ, और साहस भी हुआ। राक्षसी मूर्त्ति उनको देखकर कुछ दूर जाकर अन्तर्धान हो गयी। परम दयालु निताई मानो गोपेश्वर प्रभुके अङ्ग अपने श्रीहस्तसे सहलाकर कह रहे हैं—"दादा, (भैया) उठो। तुम नहीं उठोगे तो हमको खाना कौन देगा ? हमको भूख जो लग रही है।" क्षणभरके बाद गोपेश्वर प्रभुको ज्ञान हुआ। उनके कलेजेमें बँधी कफ-राशि अचानक बाहर निकल पड़ी। वह उठ बैठे, और देखा कि उनके शरीरमें कुछ भी रोग नहीं है। कुछ ही दिनोंमें वह देव-सेवाके योग्य हो गये। गोपेश्वर गोस्वामी कहते हैं कि बुआजी ही शीतला देवी हैं। वह बातोंमें ही कहा करती थीं, "मेरा नाम चन्द्रशशी है, किसीके नाममें दो चन्द्र नही मिले रहते हैं। भव-तापसे पीड़ित जगके जीवोंका प्राण शीतल करनेके लिए प्रभुने मुझको भूतल पर भेजा है। मैं जो उपदेश देती हूँ, वही करो।"

•

• निताई-गौरका झूलनोत्सव :

बुआजीके मन्दिरमें निताई-गौरकी अनन्त लीलाएँ हैं। उनकी एक और अपूर्व लीलाकहानी श्रीपाद गोपेश्वर प्रभुने वृन्दावनमें मुझे सुनाई थी। आनन्दलीलामय विग्रह-द्वयकी लीलाकथा मधुसे भी मधुमय है। ये सब लीलामधुका स्वयं आस्वादन करनेसे जो सुख होता है, उससे अधिक सुख होता है दूसरेको आस्वादन करानेसे।

श्रावण मासके शुक्लपक्षकी पञ्चमी तिथि थी। श्रीवृन्दावनमें सब लोग झूलनके आयोजन और उद्योगमें व्यस्त थे। श्रीगोपेश्वर प्रभुने अपने मन्दिरके बरामदेमें श्रीनिताई-गौरके झूलनको ठीक करते समय देखा कि झूला झूलानेवाला लोहेका कड़ा टूट गया है, दालानकी कड़ीकी हालत भी अच्छी नहीं है। वह निराश हो गये। इस साल झूलन-याधा उत्सव नहीं हो सकेगा—ऐसा भाव प्रकट करने लगे। सब भक्त लोग इससे विशेष दुःखी हुए। गोपेश्वर प्रभु कुछ स्थिर न कर सके कि क्या किया जाय।

इधर श्रीअद्वैतदास बाबाजी नामके गोपेश्वर प्रभुके एक परिचित प्रभु-भक्त अपने गाँवमें घर पर सोये-सोये उस दिन रातको स्वप्न देख रहे थे कि, 'मानो दो किशोरावस्थाके अपूर्व सुन्दर बालक खेलते-खेलते उनके पास दौड़े आये और उनका हाथ पकड़कर कहने लगे—"दादा! तुम वृन्दावन जाकर हमारा झूलन ठीक कर दो। हम दोनों भाई इसीलिए तुम्हारे पास आये हैं।" इतना कहकर अद्वैतदास बाबाजीका हाथ पकड़कर श्रीवृन्दावनमें बुआजीके निताई गौरके मन्दिरमें ले गये। यह अपूर्व स्वप्न देखकर बाबाजी महाशयने श्रीवृन्दावनकी यात्रा की। यथा समय श्रीधाम वृन्दावन पहुँचते ही तत्काल गोपेश्वर प्रभुके मन्दिरमें गये; अपना सारा स्वप्न वृत्तान्त कह सुनाया, दोनों ही प्रेमसे गद्गद होकर प्रेमालिङ्गन करते हुए बहुत देर तक अजस्र अश्रु बहाते रहे। बाबाजी महाशयने तत्काल ८०) रु० व्यय करके लोहेका गार्डर और कड़ीका प्रबन्ध करके श्रीमन्दिरके झूलनका सारा बन्दोबस्त कर दिया। बड़े समारोहके साथ गौर-निताईका झूलनोत्सव सम्पन्न हो गया। गोपेश्वर प्रभुने सबको अपने निताई गौरकी यह अपूर्व लीला-कथा सुनायी। सभी सुनकर मुग्ध हो गये। धन्य हैं अद्वैतदास बाबाजी! धन्य है गोपेश्वर प्रभु! जय-जय निताई-गौर!

• स्वयं अपनी सेवाका प्रबन्ध :

बुआजी गोस्वामिनीकी कृपाके बलसे गोपेश्वर गोस्वामी प्रभु श्रीविग्रहका सेवाकार्य अत्यन्त सुचारु रूपसे चलाया करते थे। श्री विग्रहकी किसी प्रकारकी वृत्ति निर्दिष्ट नहीं हुई थी। भूसम्पत्ति भी नहीं थी; परन्तु कहाँसे कौन सेवाके समस्त पदार्थोंका नियमित रूपसे जोगाड़ कर देता, यह विचार करने पर मनमें प्रभुकी अपार कृपाका भान होता है। नित्य अतिथि-सेवा, वैष्णव-सेवा, राजभोग आदि सब कुछ नियमित रूपसे चला करते। प्रत्येक महीनेमें सौ रुपयेसे कम खर्च नहीं होता था। करुणामय प्रभुद्वय स्वयं अपनी सेवाका बन्दोबस्त आप कर लेते थे। गोपेश्वर प्रभु सेवाकार्यमें ही व्यस्त रहते थे। उनको भिक्षा के लिये कहीं बाहर जानेका अवकाश नहीं था, और प्रयोजन भी नहीं होता था। सब लोग आकर सब पदार्थ गौर-निताईके मन्दिरमें ही दे जाते थे। जिसकी जो नयी सामग्री आती, नयी वस्तु आती, उसे वह पहले बुआजीके गौर-निताईको दिये बिना नहीं रह सकता था।

• श्रीधाम वृन्दावनमें प्रभुद्वयकी सेवा

श्रीधाम वृन्दावनमें श्रीश्री गौर-निताईके श्रीविग्रह दो स्थानोंमें नियम-पूर्वक पूजित और सेवित होते हैं। एक शृङ्गारवटमें और दूसरा गोपेश्वर प्रभुकी कुटीमें। दोनों ही जगह प्रभु-द्वयकी श्रीमूर्त्तिद्वय विराजमान है। दोनों ही स्थानोंके श्रीविग्रह प्राचीन हैं। यह सारी लीला-कथाएँ भक्तिको उद्दीप्त करती हैं तथा श्रीमन्महाप्रभुकी नित्य लीलाके ज्वलन्त उदाहरण हैं। श्रीगौराङ्ग सेवकके लिए ऐसी उपादेय वस्तु और कुछ नहीं ; आत्म-शोधनके लिए केवल मैंने इन सब लीला-कथाओंका अनुशीलन किया है। यह अनुभव की वस्तु है। अनुभवी भक्तोंके लिए प्रेमकी वस्तु है।

• बुआजी गोस्वामिनीको व्रज-प्राप्ति

बुआजी साधन-सिद्धा नारी-रत्न थीं। उनकी गौर-भक्ति अनुपम थी। शची माताकी कृपासे वे वात्सल्य रसकी अधिकारिणी बनी थीं। उनकी व्रज-प्राप्तिकी कहानी अत्यन्त सुन्दर है। एक सौ छ वर्षकी अवस्थामें उनको व्रज-प्राप्ति हुई। गौर-निताईके श्रीमन्दिरके बरामदेमें बैठकर गौर-नाम

जपते-जपते उन्होंने देह-त्याग दिया। पहले ही उन्होंने गोपेश्वर प्रभुको बतला दिया था कि अमुक दिन वे देह-त्याग करेंगी। गौर-निताईके सुन्दर मुख-मण्डलको देखते-देखते, हँसते-हँसते पुण्यवती रमणीने नश्वर देहको त्याग कर नित्य धाममें, नित्य लीलामें प्रवेश किया।

श्रीधाम वृन्दावनमें उस समय सिद्ध चरणदास बाबाजी थे। उनके प्रसिद्ध कीर्तनके दलने बुआजीको लेकर श्रीधामकी परिक्रमा करके श्रीयमुनाजीके तटपर महासंकीर्तन-यज्ञ आरंभ किया। व्रजवासी कहते हैं कि वैसा कीर्तनका आनन्द कभी नहीं हुआ। सारी वैष्णव-मण्डली उस महासंकीर्तनमें योगदान करके धन्य हो गयी। प्रत्यक्षदर्शी वैष्णव कहते हैं कि बुआजीके शवसे अपूर्व ज्योति प्रकट हुई थी। श्रीयमुनाजीके घाटपर शवकी दाह-क्रियाके समय बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई थी।

• श्री गोपेश्वर गोस्वामी प्रभु

श्रीनित्यानन्द-वंशावतंस, बालब्रह्मचारी, विरक्त-वैष्णव चूड़ामणि श्रीगोपेश्वर गोस्वामी प्रभुका चरित्र अति अद्भुत है। उनकी लीला कथाएँ अत्यन्त सुन्दर हैं। उन्होंने भारतवर्षके सब तीर्थोंका भ्रमण किया है। कठोर साधनामें जीवन व्यतीत करके गौर-निताईके प्रेममें पड़कर अब उनके श्रीचरणोंकी सेवामें आबद्ध हो गये हैं। यदि भाग्यमें बदा होगा तो उनकी संक्षिप्त जीवनी लिखकर आत्मशुद्धि करनेकी वासना मनमें है।

जय गौर निताई ! जय बुआजी गोस्वामिनी !! जय गोपेश्वर प्रभु !!

—:०:—

• उपसंहार

श्रीश्री गौराङ्ग प्रभुकी अनन्त लीला-कहानी अनन्त रूपमें जगत्में फैली हैं। उनके शरणागत भक्तवृन्दमें ये सब प्रेम और आनन्दप्रद सुमधुर लीला-कहानियाँ नाना प्रकारसे नाना रूपोंमें कीर्तित होती हैं और गायी जाती हैं। मेरे जैसे अभागे जीव उनको साधुओं और आचार्योंके मुखसे श्रवण करके कृतार्थ होते हैं। इससे बढ़कर सौभाग्यकी बात और क्या हो सकती है ? मुझको प्रत्येक पल, प्रत्येक क्षण मेरे परम दयालु श्रीश्रीनिताई-गौरकी अपार

करुणाका परिचय प्राप्त होता है। प्रभुद्वयकी कृपाका अनुभव करनेकी शक्ति वैष्णवजनकी कृपाके बलसे ही प्राप्त होती है।

श्रीधाम वृन्दावनमें प्रायः साढ़े पाँच सहस्र कुन्जोंमें श्रीविग्रह पूजित और सेवित हो रहे हैं। तथ्य की खोज करने पर प्रत्येक श्रीविग्रहकी कितनी अपूर्व मधुर लीलाओंका रहस्य उद्घाटित होगा, यह कहना कठिन है। श्रीधाम-वृन्दावन श्रीश्रीराधागोविन्दकी नित्य-लीलास्थली है। श्रीधामके महात्म्यके साथ श्रीविग्रहका महात्म्य जड़ित है तथा श्रीधामकी नित्यताके साथ श्री विग्रहकी नित्य लीला व्यक्त है। श्रीवृन्दावनवासी साधु-वैष्णवजन श्रीगौर-गोविन्दके नित्य दास हैं। उनकी प्रेम-सेवासे भक्त-वत्सल प्रभु तुष्ट होकर उनके सामने प्रकट होते हैं। अपने आपको प्रकट करना ही श्रीप्रभुका लीला-रङ्ग है। इसी कारण उनका लीलारङ्ग परम रहस्यपूर्ण है। इस लीला रहस्यका मर्म केवल उनके अन्तरङ्ग और मर्मी रसिक भक्त-साधक वृन्द ही जानते हैं। जीवाधम ग्रन्थाकारके लिए इन सब लीलाओंके रहस्यकी आलोचना और आन्दोलन करना केवल धृष्टता है। यह इसके दुस्साहसके सिवा और कुछ नहीं है।

आत्मशोधिबार तरे दुःसाहस कैनू।
लीलासिन्धुर एक बिन्दु स्पर्शिते नारिनू ॥

"केवल आत्मशुद्धिके लिए मैंने यह दुःसाहस किया है। श्रीगौर भगवान्के लीला-सिन्धुका एक बिन्दु भी मैं तो स्पर्श नहीं कर पाया।

श्रीश्रीगौर-नित्यानन्दचरणेषु समर्पितमस्तु।

——:o:——